श्रीमत क्यों ज़रूरी है?

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

मनुष्य का मन जैसा कहता वैसा वो करता। इसी को आम भाषा में, साधारण भाषा में मनमत कहते हैं। क्योंकि मनुष्य कभी किसी बात को ठीक कहता है, कभी किसी बात को गलत कहता है। इतनी त्रुटियां हैं मनुष्यों के अंदर कि जब भी वो किसी को कुछ बतायेगा तो अपूर्णता के साथ ही बतायेगा, सत्य नहीं बता सकता जिससे कि सुख मिले। इसको और साधारण भाषा में पक्षपात(बायसनेस) कहते हैं।

मनुष्य किसी संस्कृति के आधार से, देश के आधार से, परिस्थिति के आधार से, जाति के आधार से, भाषा के आधार से, अल्पज्ञ रीति से सभी को मत देता है। हर स्थान पर उसका पक्षपात दिखता है। इसीलिए मनुष्य किसी को भी ऐसे सद्मार्ग को दिखाने में असमर्थ है क्योंकि खुद ही उस मार्ग पर चलता नहीं। इतनी सारी कमी और कमज़ोरियों को लेकर चलने वाला मनुष्य कभी भी किसी को उन्नत मार्ग कैसे दिखायेगा!

इसके अलावा कई बार लोग सम्बंधियों से, दोस्तों से, औरों से भी सलाह करते हैं। ये सलाह भी उनकी अपनी परिस्थिति के आधार से ही होगी। तो इसको परमत कहते हैं। परमत अर्थात् जिसमें पूरी तरह से हमारा वो अनुभव नहीं है, किसी और के कहने पर हम चल पड़े। तो ज़रूर हम उसमें कहीं न कहीं मात खा जायेंगे। अब इन दोनों मतों को आपने देख लिया, तो इसमें क्या पाया कि जो भी मनुष्य देगा या परमत से हम सीखेंगे, उन सब में कुछ न कुछ मिलावट अवश्य होगी। और जहाँ मिलावट होगी वहाँ पर पूरी तरह से बात निखर के सामने नहीं आयेगी।

अब इसी के समाधान में 'श्रीमत' शब्द भी है जो श्रेष्ठता के आधार से चलती है। जहाँ श्रेष्ठता है वहाँ पर शांति अवश्य होगी। उदाहरण के लिए एक शब्द आप लें, महानता या निर्माणता या पवित्रता, इन शब्दों को बोलने से ही हमको शांति फील होती है। आपको नफ़रत का एहसास नहीं हो रहा है, ईर्ष्या-द्वेष का एहसास नहीं हो रहा है। तो परमात्मा हमेशा श्रीमत देते हैं, जो श्रेष्ठ मत कही जाती है। क्योंकि जब साधारण और विकारयुक्त मतों से हम मलीन होते हैं तो वहीं परमात्मा के दिये हुए श्रीमत से हम श्रेष्ठ भी बनते हैं। श्रीमत को अगर एक शब्द में बोला जाये तो एक ऐसी मत जिसमें न्यूट्रल भाव है, सबके लिए एक भाव है। मतलब इस शरीर के जितने भी टाइटल्स हैं, उन सबसे ऊपर उठकर आत्म-उन्नति का भाव है। ये भाव हमको धर्म भेद, भाषा भेद, रंग भेद, लिंग भेद, इन सबसे ऊपर उठाता है। और ये सिखाता है कि हम सभी आत्मायें इस शरीर से अलग हैं और एक पिता परमात्मा की संतान हैं। जिसके अंदर श्रेष्ठ विचार पहले से मौजूद थे लेकिन आज बहुत समय से दूसरे(शारीरिक) भावों के साथ रहने के कारण बदलाव आया। और वो बदलाव मनुष्य को नीचे ही गिराता जा रहा है। इसलिए इस दुःख के सागर से निकालने के लिए एक 'परमात्म-मत' ही कार्य कर सकती है। आज हम कितनी भी किताबें पढ़ लें, कितने भी प्रेरणादाई कोट पढ़ लें लेकिन आपको अपनी उन्नति फील हो ही नहीं सकती। लेकिन जैसे ही परमात्मा की मत को हम लेते हैं, हम आगे बढ़ना शुरु हो जाते हैं।

जैसे एक कहावत है कि मनुष्य गलतियों का पुतला है, वैसे ही शास्त्र-मत और गुरु-मत में भी वही कुछ मान्यताएं हैं जो हमको अच्छी शिक्षा ज़रूर दे देती है लेकिन उसको किया कैसे जाये वो हमें पता नहीं होता। इसलिए श्रेष्ठ मत सदा ही सर्वश्रेष्ठ है और वो परमात्मा के आधार से ही चलता है।

जो आपके जीवन को बदल दे

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मैं अमलनेर से करुणा जैन हूँ। मेरी सात साल की बेटी अपने भाई और पिता के साथ तो अच्छे से रहती है लेकिन मुझसे बहुत बुरा व्यवहार करती है, मुझे जैसे खाने को दौड़ती है। ऐसे में मैं क्या करूँ?

उत्तर : ये प्रश्न कुछ परिवारों में समस्यायें बन कर आ रहे हैं। किसी परिवार में हम पाँच-सात सदस्य इकट्ठे हुए हैं। पहले तो कोई किसी से परिचित नहीं था भाई कहीं था, तो बहन कहीं। दोनों की शादी हुई, परिचय हुआ मेल हुआ, बच्चे के बारे में किसी को कोई ज्ञान नहीं था। बच्चे आये, जन्म लिया। तो ये जो हमारे परिवार बन रहे हैं इसमें हमें ये बात, इस सत्य को जानना ही चाहिए, मानना ही चाहिए कि जन्म-जन्म के जिन आत्माओं से कर्मों के गहन सम्बन्ध हैं वो ही हमारे परिवार में आ रहे हैं। उनके संग पुण्य कर्म भी हुए हैं और कुछ बुरे कर्म भी, पाप कर्म भी। जैसा कि आपने बताया कि आपकी बेटी का व्यवहार आपके साथ ऐसा है तो इसका बिल्कुल सीधा-सा कारण है कि आपने इस बच्ची की आत्मा को बहुत सताया है, कष्ट दिया है, बुरा व्यवहार किया है, उसको हर्ट किया है बहुत ज़्यादा, तो उसके मन में क्रोध और जो बदले की भावना भरी हुई है वो अब यहाँ प्रैक्टिकल में कंटिन्यू है और कार्य कर रही है। इसीलिए ये बहुत ज़रूरी है कि हम किसी को हर्ट ना करें। हम किसी का दिल ना दुखायें, हम किसी को परेशान न करें।

जैसे किसी ने किसी का मर्डर कर दिया और कोर्ट से ले देके वो बरी कर दिया। अब उसे तो पता है ना कि उसने मर्डर किया था। बरी तो वो हो गया, उसके भी सब्कॉन्शियस माइंड में भरा हुआ है कि मर्डर तो तुमने ही किया था। किसी भी तरह से तुम बच निकले हो। तो उसको उसकी सज़ा मिलेगी ही। वो इस जन्म में मिले या अगले जन्म में। आपका यही कर्मों का सम्बन्ध है। इसका एक ही तरीका है आप राजयोग की थोड़ी प्रैक्टिस करें। और अपनी बेटी से आप सवेरे उठते ही मन ही मन क्षमा-याचना करें। कम से कम सात दिन तक। आपको तरीका यही अपनाना है कि जब आप सुबह उठें तो थोड़ा भगवान को याद करें, थोड़ा कर्मों की गति को भी याद करें और फिर इस गुड फीलिंग में आ जायें कि मैं भगवान की संतान हूँ, मैं महान हूँ, इसलिए महान आत्मा को क्षमा-याचना करने में लज्जा नहीं।

तो बिल्कुल सच्चे मन से स्वीकार करते हुए अपनी बच्ची को सामने इमर्ज़ करें, स्वीकार करें कि हे आत्मा मैंने पूर्वजन्मों में तुमको ज़रूर कष्ट दिया है, मैं तुमको सच्चे मन से हाथ जोड़कर क्षमा-याचना करती हूँ। अगर आप सच्चे मन से क्षमा-याचना करेंगी, तीन बार कर लें रोज़ सवेरे-सवेरे ही, तो सात दिन में ही उसका चित्त शान्त हो जायेगा, आपकी बेटी शांत हो जायेगी। और उसका व्यवहार आपके प्रति भी वैसा ही हो जायेगा जैसा कि भाई और पिता के प्रति है।

प्रश्न : मैं दुर्ग से राम नारायण मिश्र हूँ। हमारे घर में बहुत अच्छा बिज़नेस है। हमारे पड़ोसियों ने शायद हमारे ऊपर जादू टोना कर दिया है। ताकि हम डाउन हो जायें। तो हम इससे कैसे बचें?

उत्तर : आजकल धन का लोभ, इच्छाएं, स्वार्थ बहुत बढ़ गया है। तो तांत्रिकों को कोई लेना-देना नहीं कि कौन परेशान होगा, उन्हों को तो पैसा मिला, उन्होंने तो कहा कि बस हमें तो दस हज़ार रूपए दे दो तो हम आपका काम कर देते हैं। कई-कई तो लालची होते हैं कि व्यक्ति आया है, बोलते पचास हज़ार दे दो तो हम आपका सारा काम कर देंगे। उसने तो पचास हज़ार ले लिए और तांत्रिक प्रयोग करा दिया। दूसरा व्यक्ति परेशान हो रहा है, उसका सबकुछ बिगड़ गया है, उसका बिज़नेस नष्ट हो गया है। तो ये सब केस हो रहे हैं।

लेकिन तांत्रिकों को मैं एक बात बहुत प्यार से कहूँगा कि कर्म की गति के अनुसार इस पाप का फल इनको भी भुगतना पड़ेगा। मैं ऐसे कई तांत्रिकों को देख चुका हूँ जिनके दो-दो जवान बच्चे मर गए। और वो भी एक-एक हफ्ते के अंतर से, बिना कारण से। माना कोई रोग नहीं हुआ। तब उनका जीवन खाली हो गया, कोई नहीं बचा परिवार में। तो तांत्रिकों को भी क्योंकि वो भी तो मनुष्य हैं, उनके पास भी विवेक है अपने सद्विवेक का प्रयोग करके अपनी तंत्र विद्या को जो वेदों से ही निकली हुई है, पवित्र विद्या है, उसका मिसयूज़ पापकर्म में कभी नहीं करना चाहिए।

मैं आपको ये कहूँगा दो काम आपको करने होंगे, एक तो रोज़ सवेरे विशेष रूप से सवेरे और सोने से पहले परिवार के जितने भी सदस्य हैं शांत में बैठेंगे और 108 बार याद करेंगे मैं भगवान की संतान हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, इसमें 15 से 20 मिनट लगायें। इससे क्या होगा आपके अंग-अंग से शक्तियों की किरणें पूरे घर में फैलेंगी। घर में ही करना है, इससे उनमें भी शक्ति आयेगी और पूरे घर के वातावरण में भी वो शक्तियां फैल जायेंगी और ये जो तंत्र-मंत्र का इफेक्ट है वो नष्ट हो जायेगा। क्योंकि तंत्र-मंत्र की शक्ति इतनी शक्तिशाली नहीं होती जो सबकुछ नष्ट कर दे। कहीं-कहीं वो करती भी है। लेकिन मनुष्य को अपने मनोबल को डाउन नहीं करना चाहिए। आप और आपका परिवार दृढ़ संकल्प करे कि हम सर्वशक्तिवान के बच्चे हैं। मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। हम इस तंत्र-मंत्र से अधिक पॉवरफुल हैं। इनका प्रभाव हम पर होगा ही नहीं। हमारा बिज़नेस बिल्कुल अच्छा चलेगा। ये जो भय होता है कि हमारे ऊपर किसी ने कुछ करा दिया, हमारा तो बिज़नेस बिल्कुल डाउन हो गया, अब हम क्या करें तो निगेटिव एनर्जी पॉवरफुल होने लगेगी। अपने घर में नौ दिन तक गाय के घी का एक अखण्ड दीपक जला दें। मान लो कहीं ऐसा हो भी गया है तो गाय के घी की जो लौ निकलती है और उससे जो वेव्स निकलती हैं वो भी निगेटिव एनर्जी को नष्ट कर देती हैं। हमें पूर्ण विश्वास है और मिश्र जी भी विश्वास करें कि ये खत्म होने वाली है, ये इतनी पॉवरफुल नहीं होती कि किसी को भी चाहे नष्ट कर दें। आप इसको हरा दें। आप ये समाधान करेंगे तो बिल्कुल ठीक हो जायेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल